REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 9 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2020

शिक्षा के सुधारक के रूप में पंडित ईश्वरचंद्र विद्यासागर

प्रा. प्रमोद किशनराम घन
सहाय्यक प्राध्यापक एवं विभाग प्रमुख, हिंदी
तोष्णीवाल महाविद्यालय, सेनगाव जिल्हा हिंगोली.

सारांश:

महान लोग समाज पर प्रभाव डालने के लिए पैदा होते हैं। जब हमारा समाज अन्धविश्वासों, निरक्षारता, अचेतनता से भरा हुआ था और जब अंग्रेज अपनी राजनीतिक विजय में व्यस्त थे तब विद्यासागर हमारे समाज को प्रकाशित करने के लिए सूर्य के समान प्रकट हुए। उन्होंने हमारे समाज को बदलने के लिए अंतहीन काम किया। शिक्षा और महिला शिक्षा और उच्च शिक्षा की स्थिति को बदलने में उनका योगदान उल्लेखनीय था। १९वीं शताब्दी के मध्य में आए विद्यासागर विभिन्न आधुनिकतावादियों के बीच एक प्रमुख व्यक्तित्व थे। विद्यासागर एक बंगाली संस्कृत पंडित, शिक्षक, समाज सुधारक, लेखक और परोपकारी थे। शिक्षा के विभिन्न पहलुओं में उनका बहुत बड़ा योगदान है। उन्होंने शिक्षा प्रणाली को समृद्ध और सुधार किया।

परिचय:

ईश्वर चंद्र विद्यासागर को आज भी १९वीं सदी के बंगाल के एक महान समाज और शिक्षा सुधारक के रूप में याद किया जाता है। वह बंगाल और भारत के महान हिस्से में एक प्रतीक हैं। वह एक भारतीय बंगाली पॉलीमैथ और बंगाल पुनर्जागरण के प्रमुख व्यक्ति थे। विद्यासागर अपने देश की कमजोरियों और उन्हें सुधारने के लिए बहुत सचेत थे। वे पाश्चात्य पद्धति के अनुसार शिक्षा के पक्षधर थे। उसके लिए, प्रगति प्राचीन भारतीय सभ्यता की वापसी से नहीं होगी, चाहे वह कितनी भी महान क्यों न हो। इसके विपरीत, वह वैज्ञानिक ज्ञान के क्षेत्र में प्रगति करना चाहते थे और साथ ही एक आलोचनात्मक दिमाग का विकास करना चाहते थे। उनके बारे में, यह सोचना असंभव है कि युवावस्था से ही यूरोपीय विचारकों ने उनके सोचने के तरीके पर कितना प्रभाव डाला होगा। शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में उनका योगदान उल्लेखनीय है। उन्होंने बंगाल शिक्षा प्रणाली में क्रांति ला दी और बंगाली भाषा को लिखने और सिखाने के तरीके को परिष्कृत किया। महिला शिक्षा और उच्च शिक्षा के बारे में उनकी सोच अतुलनीय थी। उन्होंने अंधविश्वास, बहुविवाह आदि से समाज को बदलने की कोशिश की। उनकी मृत्यु के बाद रवींद्रनाथ टैगोर ने कहा। ९कोई आश्चर्य करता है कि भगवान ने चालीस लाख बंगालियों को पैदा करने की प्रक्रिया में एक आदमी कैसे बनाया९।

विद्यासागर भारत में शिक्षा के विकास में एक चमकता सितारा है। शिक्षा प्रणाली के सुधार और विकास में उनका बहुत बड़ा योगदान है। एक समाज सुधारक के रूप में, एक शैक्षिक सुधारक के रूप में, बंगाली साहित्य और भाषा के विकास आदि जैसे विभिन्न पहलुओं में विद्यासागर के योगदान के बारे में विभिन्न शोध कार्यकर्ताओं ने अलग-अलग समय पर अध्ययन किया है। वर्तमान

में २१वीं सदी में खड़े विद्यासागर की शिक्षा को लेकर जो विचारधारा है वह भी उतनी ही प्रासंगिक है।

विद्यासागर के शैक्षिक आदर्श:

एक सच्चे मानवतावादी की तरह, विद्यासागर ने हमेशा शिक्षा को अधिक उद्देश्यपूर्ण और मनोरंजक बनाने की कोशिश की। शिक्षा के प्रति ब्रिटिश दृष्टिकोण पर्याप्त संख्या में लिपिकों और प्रशासकों को प्रशिक्षित करना था जो सरकारी तंत्र को सुचारू रूप से चलाने में मदद करेंगे। लेकिन विद्यासागर का शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण बिल्कुल अलग था। वह शिक्षा के लिए एक नए युग का निर्माण करना चाहते थे। उन्होंने कहा कि छात्र अपने व्यावहारिक जीवन के लिए सीखेंगे। इसलिए उन्होंने सुझाव दिया कि संस्कृत के विभिन्न विषयों को वैज्ञानिक और तार्किक तरीके से पढ़ाया जाएगा।

विद्यासागर का शिक्षा में विश्वास था कि, - ष्भारतीयों की शिक्षा संस्कृत और अंग्रेजी के बारे में पर्याप्त ज्ञान होगी जिसने हमारी मातृ भाषा को पश्चिमी सभ्यता और विज्ञान से समृद्ध किया।ष[८] उन्होंने महसूस किया कि, भारतीयों के विकास और प्रगति के लिए पश्चिमी शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है। हालाँकि, यह ज्ञान अंग्रेजी भाषा के माध्यम से निकाला जाता है लेकिन मुख्य उद्देश्य पश्चिमी ज्ञान के माध्यम से देशी भाषा का विकास है। उन्होंने न केवल अंग्रेजी ज्ञान और पश्चिमी विज्ञान पर यह ज्ञान प्रदान किया बल्कि विद्यासागर ने शिक्षा में मातृभाषा के विकास के इस वास्तविक तथ्य को समझा।

विद्यासागर ने अपने प्रस्तावित पाठ्यक्रम के मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक और तार्किक पहलू को शामिल करने का सुझाव दिया। वह पढ़ने, लिखने, भूगोल, इतिहास, गणित, प्राकृतिक दर्शन, मानसिक और नैतिक दर्शन, ज्यामिति, नैतिक विज्ञान, राजनीति विज्ञान, शरीर विज्ञान, प्राकृतिक विज्ञान, शरीर विज्ञान, अंग्रेजी भाषा और पश्चिमी भाषा आदि के पक्षधर थे। उन्होंने अंग्रेजी को अनिवार्य विषय के रूप में अपनाया। वैकल्पिक विषय। उन्होंने शिक्षा को व्यावसायिक पहलुओं से जोड़ा।

वे पश्चिमी शिक्षा का विस्तार चाहते थे क्योंकि उन्होंने महसूस किया कि देश की प्रगति और व्यक्ति का समग्र विकास केवल विज्ञान और भौतिकवादी दर्शन के नवीनतम विकास के ज्ञान के अधिग्रहण के माध्यम से हो सकता है। वे केवल सिद्धांतवादी कभी नहीं थे। उन्होंने हमेशा अपनी विचारधारा को सीधी कार्रवाई में बदलने की कोशिश की थी। वह आनंदमंगल और विद्यासुंदर जैसे प्रचलित ग्रंथों से संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने छात्रों के लिए कई किताबें लिखीं। विद्यासागर ने सुझाव दिया कि संस्कृत, विज्ञान और गणित को पश्चिमी ज्ञान के आधार पर मुहावरेदार बंगाली में फिर से तैयार किया जाना चाहिए।

जब विद्यासागर छात्र थे, तो उन्होंने देखा कि केवल रटना ही शिक्षण का तरीका था। उसके बाद जब उन्होंने प्राचार्य के रूप में संस्कृत कॉलेज में प्रवेश लिया तो वे शिक्षण प्रणाली को बदलना चाहते थे। उन्होंने जीवन केंद्रित और व्यावहारिक शिक्षण का सुझाव दिया। उनके अनुसार, छात्र अनुभव के माध्यम से सीखेंगे। विद्यासागर सामयिक रुचि के सुखद पठन पेश करना चाहते थेरू जानवरों, पौधों, पेंटिंग, नेविगेशन आदि के बारे में। उन्होंने कहा कि, कक्षा छात्रों और शिक्षकों के बीच सुखद और संवादात्मक होगी। उन्होंने तर्क और वैज्ञानिक पद्धति पर जोर दिया।

विद्यासागर के अनुसार मातृभाषा ही शिक्षा का माध्यम होगी। मातृभाषा के माध्यम से शिक्षक जटिल सामग्री को आसानी से प्रस्तुत कर सकते हैं। छात्र भी मातृभाषा के माध्यम से सामग्री के महत्व और महत्व को आसानी से समझ सकते हैं। विद्यासागर उस समय की शिक्षा प्रणाली में मातृभाषा की उपेक्षा की तीखी आलोचना करते हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि शिक्षा का माध्यम पश्चिमी शिक्षा पर आधारित बंगाली होगा। उन्होंने सुझाव दिया कि छात्र बंगाली में संस्कृत भाषा के बुनियादी नियमों को सीखें। उन्होंने कहा कि पहली पांच कक्षाओं के लिए अंग्रेजी अनिवार्य कर दी गई थी और गणित अंग्रेजी में पढ़ाया जाता था। पश्चिमी मॉडल में इतिहास, भूगोल और प्राकृतिक विज्ञान आदि पढ़ाए जाते थे। छात्रों की परीक्षा के संबंध में विद्यासागर का एक कट्टरपंथी दृष्टिकोण था। कॉलेजों की परीक्षाएं सालाना आयोजित की जाती थीं। इस पर विद्यासागर को गंभीर आपत्ति थी। मूल्यांकन के लिए, विद्यासागर ने छात्रों को वर्ष भर हासिल करने के लिए वार्षिक परीक्षा

के बजाय मासिक परीक्षा की शुरुआत की। क्योंकि उन्होंने व्यक्तियों के सर्वांगीण विकास पर अधिक बल दिया।

नैतिक शिक्षा पर विद्यासागरजी का दृष्टिकोण:

विद्यासागर ने नैतिक शिक्षा का समर्थन किया। उन्होंने हमेशा छात्रों के नैतिक विकास को महत्व दिया। उनके कई साहित्य शिक्षा के नैतिकता को दर्शाते हैं। ३अलंकार३ वर्ग के लिए, वह नैतिकता पर निबंधों के पठन को जोड़ना चाहते थे। ३स्मृति३ वर्ग के लिए विद्यासागर ने ३मनु संहिता३ को पाठ्यक्रम के रूप में रखा और इसके बारे में उन्होंने लिखा, - ३यह सामाजिक, नैतिक, धार्मिक और आर्थिक कानूनों का व्यवहार करता है।३ उन्होंने रेव। बंगाली में थॉमस जेम्स। विद्यासागर ने नैतिक दर्शन को पाठ्यचर्या सामग्री के रूप में महत्व दिया। १८७२ में उन्होंने ३बेताल पंचबिंसाती३ पुस्तक लिखी। पुस्तक की प्रस्तावना में उन्होंने लिखा है कि, यह राजा विक्रमादित्य की पौराणिक कथाओं का संग्रह है। इन कहानियों का मूल सोमदेव भट्ट द्वारा कथासरितसागर में पाया जाता है। छात्रों के बीच नैतिकता के विकास के लिए उन्होंने इन पुस्तकों को पाठ्यक्रम के रूप में शामिल करने का सुझाव दिया और उन्होंने हमेशा ष्कठमालाष्, ष्बोधोदयष् आदि की पुस्तकों में हर छोटी कहानी के अंत में नैतिक वार्ता को जोड़ा।

प्राथमिक और जन शिक्षा का विकास:

प्राथमिक शिक्षा में विद्यासागर का बहुत बड़ा योगदान है। विद्यासागर के समय तक प्राथमिक शिक्षा को ब्रिटिश सरकार द्वारा कोई महत्व नहीं दिया गया था। उस समय प्राथमिक शिक्षा की उपेक्षा की गई थी। १८७३ में विद्यासागर ने प्राथमिक शिक्षा पर जोर देने की ज़रूरतों को समझाने के लिए हॉलिडे को एक रिपोर्ट लिखी। इस प्रतिवेदन में विद्यासागर ने इसे पुराने सुधारों से मुक्त कर प्राथमिक विद्यालयों के गठन, पुस्तकें लिखने और शिक्षक प्रशिक्षण पर थोप दिया। ष्पाठशालाष् शिक्षा के स्तर में सुधार के लिए, उन्होंने मॉडल स्कूलों के निर्माण का सुझाव दिया, जिनका नियमित रूप से निरीक्षण किया जाएगा। उन्होंने प्राथमिक या बुनियादी शिक्षा के विकास में कई किताबें लिखी। ३वर्ण पोरिचॉय३ विद्यासागर की अनुपम कृति है। प्राथमिक शिक्षा में उन्होंने शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा का सुझाव दिया। एक निरीक्षक के अधीन दो जिले होंगे। विद्यासागर ने प्राथमिक शिक्षा में पाठ्यक्रम के रूप में लिखने, पढ़ने, अंकगणित, भूगोल, शरीर विज्ञान, राजनीति विज्ञान, इतिहास, ज्यामिति, नैतिक विज्ञान आदि पर जोर दिया। उन्होंने स्कूल प्रशासन के लिए सर्कल सिस्टम शुरू किया। उन्होंने शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए सामान्य स्कूलों की स्थापना की। बर्दवान, हुगली, मिदनापुर और नदिया, इन चार जिलों में से प्रत्येक में पांच सामान्य स्कूल स्थापित किए गए थे। हुगली, बर्दवान और मिदनापुर में प्राथमिक शिक्षा के विकास के लिए मॉडल स्कूल जहां स्थापित किए गए। इस प्रकार, वह बुनियादी शिक्षा को जन-जन तक पहुँचा रहे थे। लड़कों और लड़कियों दोनों के लिए प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में उनके प्रयास और भी अधिक सफल होते यदि बंगाली अभिजात वर्ग के सदस्य उनके पीछे खड़े होते और उनकी और अधिक मदद करते।

शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय की स्थापना:

१८६६ में, बंगाल सरकार ने बेथ्यून स्कूल की समिति को पत्र लिखकर अपने सदस्यों को बेथ्यून स्कूल के संबंध में महिला शिक्षकों के एक सामान्य वर्ग के उद्घाटन में अधिकारियों द्वारा ली गई रुचि से परिचित कराने के लिए लिखा था। विद्यासागर ने शिक्षक प्रशिक्षण के महत्व को महसूस किया। इसके लिए उन्होंने सरकार से शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय स्थापित करने का अनुरोध किया, जहां शिक्षक अपने शिक्षण कौशल का विकास कर सकें। लेकिन ब्रिटिश सरकार इन स्कूलों के लिए वित्तीय सहायता देने को तैयार नहीं थी। उनकी दीक्षा से १७ जुलाई १८७० को एक सामान्य विद्यालय की स्थापना हुई। उसके बाद १८७५ में एक सामान्य विद्यालय की स्थापना की गई, जहां साठ शिक्षकों को दो किश्तों में प्रशिक्षित किया जाएगा। उनके शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम योजना को लागू करने के लिए मिदनापुर, बर्दवान, हुगली और नादिया

जिलों में पच्चीस स्कूल स्थापित किए गए थे। आजकल शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में बहुत सारी बातें होती हैं। अब विभिन्न समिति, आयोगों, शैक्षिक नीति, एनसीटीई ने शिक्षकों के प्रशिक्षण पर जोर दिया।

महिला शिक्षा के विकास के लिए प्रयास:

१९वीं शताब्दी की महिलाओं की प्रगति के संदर्भ में विद्यासागर की सबसे उल्लेखनीय उपलब्धियों में से एक बंगाल में महिला शिक्षा को बढ़ावा देना है। महिला शिक्षा में उनका बहुत बड़ा योगदान है। जब महिलाओं की उपेक्षा की जाती थी तो वह एक उज्ज्वल सूरज की तरह उनके पास खड़ा था। विद्यासागर का मानना था कि शिक्षा से महिलाओं को समाज में सम्मान मिलेगा। उन्होंने पारंपरिक अंधविश्वासों को आगे बढ़ाते हुए महिला शिक्षा को बढ़ावा देना शुरू किया। आधुनिकता के जागरुक प्रतीक ने ठीक ही महसूस किया है कि शिक्षा के बिना महिलाओं की मुक्ति नहीं है।

विद्यासागर और बेथ्यून स्कूलरू १९४९ में, श्री बेथ्यून ने कुछ बंगाली नेताओं की मदद से लड़कियों की शिक्षा के लिए एक मुफ्त स्कूल की स्थापना की। उसके बाद इसे बेथ्यून स्कूल ने जाना। १९५० में विद्यासागर ने बेथ्यून स्कूल की कमान संभाली। उसके बाद, उन्होंने अपने दोस्तों और परिचितों से अपनी बेटी को बेथ्यून स्कूल भेजने का अनुरोध किया। उनके अनुरोध के लिए पंडित तारानाथ बचोस्पति, शंभुनाथ पंडित, हरदेव चट्टोपाध्याय प्रमुख शाही लोगों ने अपनी बेटियों को स्कूल भेजा। देबेंद्रनाथ टैगोर ने अपनी बेटी सौदामिनी को भी स्कूल भेजा। विद्यासागर के निर्देश के अनुसार, बेथ्यून स्कूल बेथ्यून स्कूल की कारें के दो किनारों पर लिखता था- ष्कन्याप्योबोग पलोनिया शिक्षायति जत्नाताष् (बेटियों की देखभाल और बेटों के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए)।

बालिका विद्यालय की स्थापना में सहायतारू शिक्षा परिषद के सचिव डॉ. मौअत जब भारत आए तो उनकी भारत में स्त्री शिक्षा के प्रति रुचि थी। विद्यासागर ने महिला शिक्षा के प्रसार और विकास के लिए मौआत को एक रिपोर्ट लिखी। वह महिला शिक्षा को बढ़ावा देने में विशेष रूप से सक्रिय थे। विद्यासागर ने श्री मौत से सहमति जताई और निर्णय लिया कि गाँव में एक बालिका विद्यालय स्थापित किया जाएगा जहाँ निवासी इसके लिए प्रयास कर सकते हैं। इस योजना के अनुसार १८५८ में मिदनापुर जिले में तीन स्कूल, बर्दवान जिले में ग्यारह स्कूल, हुगली जिले में बीस स्कूल, नादिया जिले में एक स्कूल स्थापित किया गया था। इस स्कूल के छात्रों की संख्या ३५०० थी।

नारी शिक्षा भंडार का गठनरू विद्यासागर को उम्मीद थी कि इन स्कूलों के लिए उन्हें भारत सरकार से आर्थिक मदद मिलेगी। लेकिन एक साल बाद भी उन्होंने महसूस किया कि भारत सरकार आर्थिक मदद करने को तैयार नहीं है। वहीं, स्कूलों के शिक्षकों को मानदेय नहीं मिल रहा है. इसके लिए उन्होंने काफी लेखन किया। अंत में पैसा एक बार स्वीकार कर लिया गया था। भारत सरकार ने सूचित किया है कि सरकार विद्यासागर बालिका विद्यालय के लिए कोई स्थायी धन नहीं दे सकती है। फिर विद्यासागर ने इन विद्यालयों की आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए नारी शिक्षा भंडार का गठन किया। इन स्कूलों को चलाने और शिक्षकों को भुगतान करने के लिए, उन्होंने सरकार के रिफंड की प्रतीक्षा करते हुए अपना पैसा खर्च करने में संकोच नहीं किया।

ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्री शिक्षा का प्रसाररू विद्यासागर ने न केवल बंगाल और भारत के केंद्र कलकत्ता के मध्यवर्गीय समाज में महिलाओं की शिक्षा के लिए एक गहरा अंतर संबंध स्थापित किया। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में भी स्त्री शिक्षा का प्रसार किया। विद्यासागर ने ही जौग्राम गांव में एक बालिका विद्यालय की स्थापना की।

आजकल महिलाओं की शिक्षा, महिला मुक्ति, महिला सशक्तिकरण, लैंगिक भेदभाव आदि पर बहुत चर्चा होती है। अब हम कन्याश्री प्रोकल्पो, बेटी बचाओ, बेटी परहाओ (लड़कियों को बचाओ, शिक्षित करो) जैसी सरकारों द्वारा शुरू की गई कई योजनाओं को देखते हैं। लड़कियों) आदि। उस समय विद्यासागर ने बालिका शिक्षा की वित्तीय सहायता के लिए नारी शिक्षा भंडार की स्थापना की। अब विभिन्न समितियां,

आयोग जाति, पंथ, धर्म, लिंग आदि के बावजूद समान शिक्षा पर जोर देते हैं। विद्यासागर ने उस समय इन पर विचार किया था।

निष्कर्ष:

विद्यासागर बंगाल का एक नया युग लाने वाले बंगाल के शुरुआती उद्यमियों में से एक थे। यह सच है कि विद्यासागर ने उनकी सदी में सबसे बड़ा योगदान उनके व्यक्तित्व का था। बेहतर शिक्षा के उनके सपने आज भी आदर्श हैं। जब भी उन्होंने पाया कि उनके आदर्श व्यावहारिक नहीं हैं, उन्होंने तुरंत दृश्य छोड़ दिया था। इसलिए वे अकेले ही मरे, लेकिन उन्हें उनके असाधारण योगदान के लिए याद किया गया। समाज सुधार, शिक्षा सुधार और साहित्य के क्षेत्र में उनका बहुत बड़ा योगदान है। राष्ट्रवाद, मानवतावाद और लोकतांत्रिक उदारवाद के बारे में उनके विचारों ने १९वीं शताब्दी में औपनिवेशिक मध्य वर्ग को प्रभावित किया था। संस्कृत महाविद्यालय का सुधार, नारी शिक्षा का विकास, बरनो पोरिचॉय, विधवा पुनर्विवाह विद्यासागर का अतुलनीय कार्य है। उन्होंने अपने लेखन से हमारे बंगाली साहित्य को समृद्ध किया। वह सभी के लिए शिक्षा के द्वार खोलता है। उन्हें बंगालियों और दुनिया के लिए उनके काम के लिए हमेशा याद किया जाएगा।

संदर्भ:

१. बसाक, एन.एल. (१९७४)। 'हिस्ट्री ऑफ वर्नावयूलर एजुकेशन इन बंगाल (१८००-१८७४): ए रिव्यू ऑफ द अर्ली ट्रेंड्स एंड एवसपेरिमेंट्स।' भारती बुक स्टाल, कलकत्ता।
२. बानो, अख्तर और आलम, शफीकुल (२०१६)। 'ईश्वर चंद्र विद्यासागर और शिक्षा के उनके दर्शन पर पश्चिमी ज्ञान और संस्कृति का प्रभाव', इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड साइकोलॉजिकल रिसर्च
३. बिस्वास, डी.के. (१९५८) 'महर्षि देवेंद्रनाथ टैगोर और तत्वबोधिनी सभा: बंगाल पुनर्जागरण में अध्ययन।', ए.सी.गुप्ता, जादवपुर द्वारा संपादित: राष्ट्रीय शिक्षा परिषद।
४. चौधरी, अविषेक. 'स्मरणरू बंगाल में १९वीं शताब्दी के दौरान शिक्षा के क्षेत्र में उनकी उपलब्धियों और नवाचारों के लिए ईश्वर चंद्र विद्यासागर को श्रद्धांजलि।-, अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा और अनुसंधान जर्नल, खंड ३, अप्रैल २०१७
५. घोष, रोनी (२०१८)। 'ईश्वर चंद्र विद्यासागर का बंगाली भाषा और साहित्य के विकास में योगदान और वर्तमान संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता', सामाजिक विज्ञान की एशियाई समीक्षा।